

















## संक्षिप्त समाचार

महादेवी हथिनी के लिए एक नई शुरुआत, कोल्हापुर में वंतारा खोलेगा पुनर्वास केंद्र

कोल्हापुर, एजेंसी। अनंत अंबानी की वंतारा ने करणा और सहयोग की मिसाल पेश करते हुए एक ऐसे समाधान सुझाया है, जो जनता की भावनाओं, मठ के नेतृत्व और जनवरों की भलाई - इन सभी के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। यह मामला कोल्हापुर की मंदिर हथिनी महादेवी से जुड़ा है। इसे माधुरी के नाम से भी जाना जाता है। वंतारा ने कोल्हापुर के नंदेंगे वंतारे में महादेवी के लिए इकाई सुनवाई केंद्र बनाने का प्रारंभ सख्त है। बल्कि कोल्हापुर के लोगों और जैन मठ की उपर्युक्त भावनात्मक जुड़ाव को भी समान देता। ऐसा केंद्र भरात में पहली बार बनाया जाएगा। यह पहल दिखाती है कि वंतारा परंपरा के सम्मान के साथ-साथ वंतारा निक देखभाल और संवेदनशीलताना को भी महत्व देता है। यह केंद्र जैन मठ, महाराष्ट्र और हाई-पावर कमेटी की वंतारा से और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की हाथी देखभाल के मानकों के अनुसार बनाया जाएगा। अनंत अंबानी की वंतारा टीम यह दिखा रही है कि भावनात्मक जुड़ाव, आधिकारिक चिकित्सा और मिलकर काम करने का तरीका - ये सब एक साथ आकर जनवरों की भलाई के लिए बेहतरीन समाधान दे सकते हैं। यह योजना महादेवी की सेहत और आराम को प्राथमिकता देती है। यह साथ ही यह भी सुनिश्चित करती है कि वह अपनी पिय जनता के पास ही रह सके। इस पुनर्वास केंद्र के लिए जैन ने वंतारा, जैन मठ और महाराष्ट्र सरकार मिलकर तय करेंगे। जैन और बाकी जरूरी मजूरी मिलते ही वंतारा की एक्सप्लॉट टीम काम शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार है। कोल्हापुर में प्रस्तावित इस केंद्र में महादेवी के लिए कई खास सुविधाएं होंगी - जैसे हाइड्रोप्रेस तालाब, तैराकी के लिए जगह, लेजर थ्रेपी रूम, और 24x7 वेटरनी विल्निक। इसके अलावा वहां एक कवर किया हुआ नाइट शॉल्ट, चेन-फ्री ओपन एरिया, रेत का गड्ढ, रबर की फर्श और मुलायम रेत के टीले भी होंगे, जो महादेवी को अर्थाराइट्स और पैर की बीमारियों से बचने में मदद करेंगे। ये सब सुविधाएं उनकी सेहत, आराम और गरिमा को ध्यान में रखकर बनाई जाएंगी।

दिल्ली में नेताओं और अफसरों के सरकारी आवासों का बढ़ा किया गया, अब कितना देना होगा

नई दिल्ली, एजेंसी। राजधानी में दिल्ली सरकार के नेताओं और अफसरों के सरकारी आवासों का कियाया अब बढ़ गया है। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने दिल्ली में अपने जनरल पूल के अंतर्गत सभी सरकारी आवासों के लिए लाइसेंस फीस (किराया) में बदलाव किया है। युवराज साथ को जारी के मुताबिक नई दो 5 अपास से लागू होंगी। आदेश के अनुसार, सभी टाइप 7 बालों पर अब हर महीने 5,430 रुपये लाइसेंस फीस लगेगी। इनमें से अधिकांश बालों पर शिविल लाइसेंस क्षेत्र में स्थित हैं। इस केंद्रीयी के मुख्य और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केंद्रीयी के जीवनावली का आधिकारिक आवास रहा विवादास्पद 6 फ्लैट्स रोड बंगला भी शामिल है। यह बंगला पीडब्ल्यूडी के जनरल पूल में सबसे बड़ा है, जिसका लिंगिंग एरिया लागूगा 1,908 वर्ग मीटर है, जबकि इस प्रकार के अन्य बंगलों में लिंगिंग सेस 480-600 वर्ग मीटर है। पीडब्ल्यूडी ने कहा, सभी विभागों, जिनके पास पूल के आवास मौजूद हैं, उन्हें भी अपने दस्तों को लाइसेंस फीस की निम्न संस्थानित दरों को लागू करना होगा और यह भी सुनिश्चित करना होगा कि आवासीय द्वारा देय लैटेस्ट लाइसेंस फीस इस आदेश के अनुसार लागू और वसूली जाए। वर्संत कंज और तिलक मार्ग जैसे क्षेत्रों में टाइप 6 क्लार्टींस के लिए, जिनका औसत क्षेत्रफल 160-180 वर्ग मीटर है, लाइसेंस फीस 2,590 रुपये है, जबकि टाइप 5 क्लार्टींस के लिए यह फीस 1,750 रुपये है। इनमें से अधिकांश क्लार्टींस फीस इस आदेश के अनुसार लागू और वसूली जाएगी। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को रोकने के लिए बनाई गई है। उन्होंने इसे छुआइटू की दीवार नाम दिया है। यह दीवार सरकारी पोर्टेंट्रोक के निवासी मौजूद हो गई है, जो कर्सर कलेक्टर कार्यालय से मजर एक किलोमीटर दूर स्थित है। अंस्थियार यह गांव के ग्राम प्रशासनिक जमीनों पर बनाई गई है। यह दीवार दलितों की आवाजाही को र





